International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 42-44

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति

सुनीता

शोधार्थी हिंदी विभाग महर्षि दयानद विस्वविद्यालय, रोहतक, हरयाणा, भारत।

सरांश

१४ सितम्बर १९४९ को सविधान की भाषा समिति ने हिंदी को राजभाषा के पद पर आंसीन किया क्योंकि भारत की बहुसंख्यक जनता द्वारा हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा था। सवाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी भाषा में प्रकाशित पत्र -पत्रिकाओं ने देश को आज़ाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा भारतीओं को एक सूत्र में बांधे रखा। स्वतंत्रता के पश्चात भले ही हिंदी को राष्ट्रभाषा व राजभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन भाषा के प्रचार व प्रसार के लिए सरकार द्वारा सराहनीय कदम नहीं उठाए गए व अंग्रेजी भाषा का प्रयोग अनवरत चलता रहा। भले ही आज हिंदी की वैश्विक स्थिति काफी बहेतर है विश्व के प्राय: सभी महतवपूर्ण देशों के विश्व विद्यालयों में हिंदी अध्ययन - अध्यापन हो रहा है। परन्तु विडंबना यह है कि विश्व में अपनी स्थिति के बावजूद हिंदी भाषा अपने ही घर में उपेक्षित जिंदगी जी रही है। जहां गुड मॉर्निंग से सूर्योदय और गुड इवनिंग से सूर्यास्त होता है। अंग्रेजी बोलने वालों को तेज तरार, बुद्धिमान एवं हिंदी बोलने वलों को अनपढ़, गवार जताने की परम्परा रही है। राजनेताओं द्वारा हिंदी को लेकर राजनीती की जा रही है। जब भी हिंदी दिवस आता है, हिंदी को लेकर लम्बे लम्बे वक्तव्य देकर हिंदी पखवावड़े का आयोजन कर इतिश्री कर ली जाती है। हिंदी हमारी दोहरी नीति का शिकार हो चुकी है। यही कारण है कि हिंदी आज तक व्यावहारिक द्रष्टि से न तो राजभाषा बन पाई और ने ही राष्ट्र भाषा।

मूल शब्द: राष्ट्रभाषा, राजभाषा, व्यावहारिक, उपेक्षित, अनवरत, बहुसंख्यक

प्रस्तावना

हिंदी विश्व की लगभग ३००० भाषाओँ में से एक है और यूरोपीय परिवार की भाषा हे। हिंदी की आदि जननी अपभ्रंश भाषा है। हिंदी संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुंची है फिर अपभ्रंश अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन / प्रारम्भिक हिंदी का रूप लती है। सामान्यत: हिंदी भाषा के इतिहास का आरम्भ अपभ्रंश से ही माना जाता है। १४ सितम्बर १९४९ को संविधान की भाषा समिति ने हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन किया। संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी है। जागरण के मुम्बई ब्यूरो सम्पादक ओम प्रकाश तिवारी के अनुसार २०१५ में विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या विश्व सबसे अधिक हो चुकी है। और लगभग१३० करोड़ लोग विश्व १६० देशों में हिंदी बोल रहे हैं। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। हिंदी विश्व भाषा के रूप में वैश्विक पटल पर उभरी है। फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल की जनता भी हिंदी बोलती है। फिजी में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है।

हिंदी में साहित्य सृजन की परम्परा काफी पुराणी रही है। संस्कृत भाषा के बाद हिंदी भाषाभाषा का काव्य साहित्य श्रेष्तम माना जाता है। उसमे लिखित उपन्यास और समालोचना भी विश्वस्तरीय है। उसकी शब्द सम्पदा विपुल है। उसके पास पच्चीस लाख से ज्यादा शब्दों की सेना है। विश्व की सबसे बड़ी कृषि विषयक शब्दावली है। उसने अन्य भाषाओ के बहुप्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है और जो शब्द अप्रचलित अथवा बदलते जीवन संदर्भो से दूर हो गए है, उनका त्याग भी कर दिया है। आज हिंदी में विश्व का महत्वपूर्ण साहित्य अनुसृजनात्मक लेखन के रूप में उपलब्ध है और उसके साहित्य का उत्तम अंश भी विश्व की दूसरी भाषाओ में अनुवाद के माध्यम से जा रहा है। हिंदी विश्व के प्राय: सभी महत्वपूर्ण देशो के विश्वविद्यालयों में अध्ययन अधयापन में भागीदार है। उदहारण के लिए

अमेरिका, रुस, जापान, ब्रिटेन, मॉरिशस इत्यादि। अमेरिका में' विश्व', 'विज्ञानं प्रकाश', मॉरिशस में 'हिंदी समाचार', 'सौरभ', 'वसंत' आदि पत्रिकाएँ हिंदी को विकसित कर रही है। वर्तमान समय में हिंदी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रुसी तथा अंग्रेजी के समकक्ष है। आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे है, उतने बहुत सारी भाषाओ के बोलने वाले भी नहीं है। केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दोसौ से अधिक हिंदी साहित्यकार सक्रिय है।

जहाँ तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विनिमय के क्षेत्र में हिंदी के अनुप्रयोग का सवाल है तो यह देखने में आया है कि हमारे देश के नेताओ ने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचो पर हिंदी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्धघोष किया है। यदि अटल बिहारी वाजपयी तथा पी.वी. नरसिंघ राव द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में दिया गया वक्तव्य स्मरणीय है तो श्रीमति इंदिरा द्वारा राष्ट्र मंडल के देशों की बैठक तथा चंदरशेखर द्वारा दक्षेस शिखर सम्मेलन के अवसर पर हिंदी में दिए गए भाषण भी उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारत व अन्य देशों में दिए गए हिंदी भाषण भी सराहनीय है। जनसंचार माध्यमों, प्रिंट, दृश्य एवं श्रव्य की भूमिका हिंदी प्रचार - प्रसार में सदा महत्वपूर्ण रही है। प्रिंट मीडिया इतिहास काफी पुराना रहा है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने देश को आज़ाद करने की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण निभाते हुए हिंदी भाषा प्रचार-प्रसार में अहम योगदान दिया। यहां के लोक कवि एवं साहित्यकारों ने हिंदी भाषा में अपनी रचनायं जन-जन तक पहुंचा कर हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज हिंदी के विकास में देश के विभिन्न अंचलों से हजारों पत्र-पत्रिकाएं सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। राजस्थान पत्रिका, पंजाब केशरी, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, हरिभूमि, सहारा डेली न्यूज़ जैसे अनेक समाचार-पत्र जहां लाखों पाठकों के घर-घर पहुंच रहे हैं वहीं एक्सप्रेस मीडिया, दैनिक समाचार पत्रों द्वारा पुरे देश में हिंदी संवाद को स्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभा रही है। हिंदी सिनेमा का भी हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण हाथ रहा है।

लेकिन विडंबना यह है कि आज विश्व में अपनी मजबूत स्थिति के बावजूद हिंदी भाषा अपने ही घर में उपेक्षेत जिंदगी जी रही है। सात समुन्दर पर की भाषा अंग्रेजी के मोहजाल से हम अपने आप को अभी तक निकाल नहीं पाए हैं। जहां गुड मॉर्निंग से सूर्योदय होता हो, इवनिंग से सूर्यास्त, किसे के पैर पर पैर पड़ जाये तो सॉरी,गुस्सा आने पर नॉनसेन्स, गेट आउट, इडियट आदि -आदि की ध्वनि मुख से बार-बार निकलती हो। संसद में विचार व्यक्त करने के लिए आज भी धड़ल्ले से अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा है। अंग्रेजी बोलने वालों को तेज-तरार, बुद्धिमान समझने एंव हिंदी बोलने वालों को अनपढ़ ग्वार जानने की परम्परा हावी हो। अंग्रेजी विद्यालय में बच्चों को शिक्षा के लिए भेजना शान-शौकत बन चुका हो तो कैसे कोई कह सकता है, यह वही देश है जिस देश की 90 प्रतिसत जनता हिंदी समझती है एवं बोलती है। जिस देश की राजभाषा व राष्ट्रभाषा हिंदी है।

हिंदी की आज यही वर्तमान दशा है,जहां हिंदी अपने ही लोनों से पग-पग पर उपेक्षित हो रही है।दोहरेपन की नीति के कारण आज तक स्वतंत्रता के 65 वर्ष उपरांत भी इस देश को सही मायने में एक भाषा नहीं दे पाये जिसमें पूरा देश बातचीत क्र सके। जिस भाषा को अंग्रेजों ने हमारे ऊपर थोपा, उसे आज भी बड़े शोक से अपनी दिनचर्या में उतरे बैठे हैं। जब भी हिंदी दिवश आता है, हिंदी पखवाड़ा, सप्ताह आयोजन कर हिंदी पर लम्बे-लम्बे वक्तव्य देकर, प्रतियोगिताआयोजित कर कुछ लोगों को हिंदी के नाम पर सम्मान, इनाम देकर इतिश्री कर ली जाती है। हिंदी पखवाड़ा समाप्त होते ही हिंदी वर्ष भर के लिए विदा हो जाती है।

सरकारी कार्यालय हो या निजी निवास,प्राय: हर जगह दीवारों पर चमचमाते अंग्रेजी के सुनहरे पट दिखाई देते हैं। अंग्रेजी अख़बार का मंगाना फैशन सा हो गया है। इस तरह दोहरपन की स्थिति ने हिंदी के विकास को लचीलापन बनाकर रख दिया है। तुष्टिकरण की नीति से कभी भी हिंदी का विकास नहीं हो सकता। हिंदी हमारी दोहरी नीति का शिकार हो चुकी है। यही कारण है कि हिंदी इस देश आज तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई।

दूसरी तरफ पूर्वी तथा दखिणी भारत में (गैर हिंदी भाषा) क्षेत्रों में समय-समय पर हिंदी को लेकर विवाद होता रहता है। चरमपंथियों को लगता है कि हिंदी के प्रचार से हिन्दुओं

का प्रचार होगा। हिंदी को हिंदुत्व से जोड़ने की कोशिशें आजादी के बाद से ही हो रही है। रामधारी सिंह दिनकर ने राज्यसभा में एक चर्चा के दौरान साथी सांसद फ्रेंक एंथोनी की इस बात का कड़ा प्रतिवाद किया था कि हिंदी हिंदुत्व की भाषा है। दिनकर जी ने हिंदी के बारे में सारी शंकाओं को दूर करते हुए कहा था कि "हिंदी संकीर्णता की नहीं, बल्कि उदारता की भाषा है। भारत जितना सहिष्णु देश है, हिंदी भी उतनी ही सहिष्णु और उदार भाषा रही है।" कुछ लोग हिंदी के नाम पर सियासत करने की कोशिश करते रहते हैं। जैसे अभी हाल ही में डीएमके के नेता स्टालिन ने मोदी सरकार पर तमिलनाडु पर हिंदी थोपने का आरोप लगाया। दरअसल स्टालिन नेशनल हाइवे पर मील के पथरों पर हिंदी में शहरों के नाम लिखे जाने को लेकर खफा थे।

हिंदी हमारी राष्ट्रभषा हे। अत : प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह सम्मान करे।राष्ट्रभाषा राष्ट्र की आत्मा होती है जिसके माध्यम से पूरा देश संवाद करता है। भारतीयों को चाहिए कि वे दोहरी मानसिकता को छोड़कर पूरे गर्व के साथ हिंदी को अपने जीवन में अपनाने की शपथ मन से ले। तभी सही मायने में हिंदी का गौरव बना रहेगा। भारतेन्दु जी ठीक ही कहा है –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।"

संदर्भ ग्रंथ

1. राजभाषा हिंदी समस्याएँ व समाधान, शशि नारायण स्वाधीन, पृष्ठ २७
2. ओम प्रकाश तिवारी दैनिक जागरण मुम्बई ब्यूरो २०१७
3. स्मारिका, सांतवा विश्व सम्मेलन, जून २००३,पृष्ठ ५
4. हिंदी भाषा चिंतन, प्रो दलीप सिंह, पृष्ठ २७९
5. दैनिक जागरण (संपादकीय जागरण) लेख, अनत विजय ८ अप्रैल २०१७